फरीदाबाद

मजदूर समाचार

अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **330** *1/–* *दिसम्बर* **2015**

दो-तीन की बातचीत हजारों के साथ

तुम्हारे यहाँ 7600 लागू
कर दिया क्या ?

हाँ, लागू कर दिया यार। पर हम लोग तो
9000 पहले ही ले रहे थे। हमारे पैसे
नहीं बढाये।

हमारी बगल वाली फैक्ट्री में तो बहुत
मस्त किया है। सब ऑपरेटर बैठ कर
3000 बढाने की कह रहे हैं।

तूने हिसाब लगाया कि न्यूनतम वेतन
कितना बनता है ?

मेरे पड़ोसी ने हिसाब लगाया
था। बोल रहा था 44,000 बना।

मेरे हिसाब से तो 36,000 ही बना।
8,000 कहाँ मिस कर गया मैं?

यार, मेरे साथी लोग ठीक कह रहे हैं।
बढाने से बात शुरू करो।

मैनेजर कह रहा था शकरकन्दी
और अमरूद खाओ। ये कुछ
सूपर फूड होते हैं।

अच्छा सुन, तू अपनी सहेली के
फँसे हुये फण्ड के बारे में बता रही थी न।

हाँ, यार। वो कई लोग हैं। उनका
तीन साल का फण्ड फँसा है।

एक बुजुर्ग वरकर कह रहे थे
कि पैसे निकालने के उपाय हैं।
उन्होंने फँसे हुये पैसे निकाले हैं।

हूँ !!! पता कर।
अच्छी तरह से साफसुथरा
मैसेजे लिख कर भेज।
मैं आगे भेज दूँगी।

दो-तीन दिन टाइम दे। उन से मिल कर
पता करती हूँ। वैसे वो बाजरे की बड़ी
बड़ाई करते हैं। कहते हैं कि गेहूँ ने
बाजरा किनारे कर बहुत गड़बड़ कर दी।

मेरा ताऊ भी यही कहता है।
लग रहा है सुनना पड़ेगा।

कुछ पौधे खरीदने गया मैं।
बहुत महँगे चल रहे हैं।

हा! हा!! हा!!! यार न्यूनतम वेतन
वाले हिसाब में पौधे होने चाहियें।

हमारा जो एक टीचर था न स्कूल में
वो वैसे तो काफी बोरिंग था पर एक
चीज बोलता रहता था जो अब भी
मन में घूमती रहती है।

?

वो कहते थे कि एक पौधे को
पानी देते-देते पेड़ बनते देखो तो
अपने में और दूसरों के अन्दर
बहुत कुछ देख पाओगे।

प्लास्टिक का पौधा खरीद ले
और कमरे में रख ले।

हा! हा!! हमारी कम्पनी के
डायरेक्टर के आफिस में तो
जंगल छपा बहुत बड़ा वॉलपेपर है।

हा! हा!! डरा दे कि
किसी दिन तू जंगल से
निकल कर उसके रूम
में बैठ जायेगा।

ऐसा तो होना बनता है।

असंगत बन गये है

कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। कानूनों का कार्य नहीं कर पाना, कानूनों का नाकारा हो जाना, कानूनों का असंगत बन जाना एक लक्षण है। यह इस बात का लक्षण है कि जिन सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर कानून खड़े हैं वे सामाजिक सम्बन्ध कार्य नहीं कर पा रहे, वे सामाजिक सम्बन्ध नाकारा हो गये हैं, वे सामाजिक सम्बन्ध असंगत हो गये हैं। सामाजिक सम्बन्ध और उसके कानूनों का असंगत होना नये सामाजिक सम्बन्ध की आवश्यकता की अभिव्यक्ति भी है, नये सामाजिक गठन की पूर्ववेला भी है। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, खरीद-बिक्री, हानि-लाभ, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा वाले सामाजिक सम्बन्ध की जगह क्या ? विश्व के सात अरब लोगों में इस पर मन्थन हो रहा है। हमें लगता है कि फैक्ट्री मजदूरों की इस सामाजिक मंथन में उल्लेखनीय भूमिका है। इस सन्दर्भ में आदान-प्रदान बढाने में मजदूर समाचार योगदान देने के लिये फैक्ट्री मजदूरों की बातों को प्रकाशित करता है।

मैक्स शॉप मजदूर : '' प्लॉट 10 और 27 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में नये ग्रेड अनुसार हैल्परों की तनखा 7600 कर दी। लेकिन पहले ही 9000 से ज्यादा ले रहे ऑपरेटरों के पैसे नहीं बढाये। ऑपरेटरों में आपस में चर्चायें हुई। दो शिफ्टों के 200 ऑपरेटर 30 नवम्बर को दोपहर बाद 3 बजे मशीनें बन्द कर फैक्ट्री के अन्दर एक स्थान पर बातचीत करने लगे। स्टाफ तथा एच आर वाले ऑपरेटरों के पास आये और बोले कि मार्च में एग्रीमेन्ट होता है, मार्च में पैसे बढायेंगे। ऑपरेटरों ने किसी को लीडर नहीं बनाया। सब ने मशीनें बन्द की थी और एक घण्टा बन्द रखने के बाद सब ने फिर मशीनें चालू कर दी।''

अर्जुन ऑटो (235 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) मजदूरों के तेवर देख कर कम्पनी ने नये ग्रेड के लिये एक दिन का समय माँगा।

विक्टोरा टूल्स श्रमिक : '' प्लॉट 46 सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 8½ की शिफ्ट है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 100 से 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। शीट मैटल का काम है, अब पावर प्रैसों पर हाथ बहुत कम कटते हैं। मारुति सुजुकी और कपारो के लिये ऑटो पार्ट्स बनाते हैं 100 स्थाई, 100 कैजुअल वरकर, और तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 150 मजदूर। फैक्ट्री में मजदूर बहुत हमलावर हो जाते थे पर इधर एक महिला परसनल हैड बनी है, वह सम्भाल लेती है। फैक्ट्री में हर जगह वरकरों में बात हो गई है कि 7600 वाला ग्रेड नहीं देंगे तो क्या करेंगे।''

ओखला औद्योगिक क्षेत्र में एक फैक्ट्री मजदूर : '' मैनेजमेन्ट रविवार को ओवर टाइम पर आने के लिये कहती है तब वरकर कुछ नहीं कहते। रविवार को फैक्ट्री सूनी ही रहती है। अगले दिन मैनेजिंग डायरेक्टर बुला-बुला कर कहता है कि प्लान बना कर नहीं आये, वरकर चुप रहते हैं।''

ऋचा निट्स वरकर : '' प्लॉट 5 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 25 नवम्बर को कम्पनी ने नये ग्रेड की सूचना चिपकाई जिसमें टेलरों की तनखा 8798 और 9238 रुपये दर्शाई थी। फिर दो दिन बाद कम्पनी ने दूसरी सूचना टाँगी जिसमें औरों के पैसे नहीं बदले थे पर टेलरों की तनखा 8379 रुपये दिखाई। सिलाई कारीगरों ने 27 नवम्बर को सुबह 9 बजे मशीनें चालू नहीं की। पन्द्रह सौ टेलरों द्वारा काम बन्द किये चार घण्टे हो गये तब 1 बजे जनरल मैनेजर आया और बोला कि जो सब कम्पनियाँ देंगी वही हम देंगे और एक दिन का समय माँगा। अगले दिन डायरेक्टर आया और बोला कि 8379 से ज्यादा कम्पनी नहीं दे पायेगी। तनखा का समय है इसलिये फँसने से बचने के लिये सब टेलर काम कर रहे हैं। तनखा लेने के बाद देखेंगे।''

खेतान इलेक्ट्रिक मजदूर : '' प्लॉट 14 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में आठ ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 350 मजदूर और 150 स्टाफ के लोग सुबह 9 से रात 7½ की शिफ्ट में सीलिंग फैन, स्टैण्ड फैन, एग्जास्ट फैन, फेस फैन, कूलर, मोनोब्लॉक पम्पिंग सैट बनाते हैं। इधर अगस्त माह का वेतन 15 नवम्बर को जा कर दिया और सितम्बर तथा अक्टूबर की तनखायें दिसम्बर-आरम्भ तक नहीं दी हैं।''

बेस्टन इलेक्ट्रोविजन वरकर : '' प्लॉट बी-70 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में इधर रोज सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्ट है और शनिवार को रात 1 बजे तक काम। किसी भी वरकर को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते। सादे वाउचर पर और खाने में बिना राशि लिखे रजिस्टर पर हस्ताक्षर करवाते हैं। वायरमैन, फिटर, इंजीनियर, हैल्पर, नये-पुराने वरकर को, सब को महीने की तनखा 6000 रुपये।''

ऑटो डेकॉर (आई एम टी मानेसर सैक्टर-3) फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा देरी से, अक्टूबर की 25 नवम्बर को दी और अक्टूबर में किये ओवर टाइम के पैसे तब भी नहीं दिये। साठ स्थाई मजदूरों की यूनियन है और प्रधान की बात मैनेजमेन्ट मानती है। वरकर काम बन्द कर देते हैं तब यूनियन प्रधान आगे आ कर काम चालू करवा देता है। इधर 26 नवम्बर को दिन की शिफ्ट में भोजन अवकाश से एक घण्टा पहले, 12 बजे मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। प्रधान ने एक बजे काम चालू करने को कहा। लन्च बाद काम शुरू। ठेकेदारों के जरिये रखे 500 मजदूर यूनियन के सदस्य नहीं हैं पर पाँच महीने पहले तनखा के समय फैक्ट्री के अन्दर हर एक से यूनियन ने 100-100 रुपये ले लिये।

सी एम आर (सेन्चुरी मैटल रिसाइक्लिंग) : पृथला-बघौला औद्योगिक क्षेत्र स्थित फैक्ट्री में 40-50 स्थाई मजदूर और पाँच ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूर काम करते हैं। कन्टेनरों और ट्रकों में कबाड़ा आता है। ढाई सौ महिला मजदूर सुबह 9 से साँय 5 की शिफ्ट में कबाड़े की छटाई करती हैं। पुरुष मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। वर्दी सब को देते हैं।

आत्म इन्टरप्राइज वरकर : ''बी-162 डी डी ए शेड्स, ओखला फेज-1, दिल्ली में एडवरटाइजिंग का काम होता है। और वरकरों को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेमन नहीं देते।''

कल्याणी टैक्नो फोर्ज मजदूर : ''प्लॉट 103 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 10 स्थाई मजदूरों की तनखा 18-20 हजार रुपये है और दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 150 से ज्यादा मजदूरों में हैल्परों को 5887 तथा ऑपरेटरों को 8500-9000 रुपये देते थे। नवम्बर की तनखा भी यही दी तो मजदूरों में हलचलें तेज हुई। मैनेजमेन्ट के लोग कह रहे हैं कि बातचीत कर रहे हैं, दो-चार दिन में निर्णय लेंगे। फैक्ट्री में मारुति सुजुकी के गियर बनते हैं।''

हरियाणा विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड का गठन हरियाणा सरकार ने राज्य बिजली बोर्ड से किया है। बड़ी सँख्या में वरकर ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे हैं, गुड़गाँव में ही 550 हैं। जे डी ठेकेदार कम्पनी ने 2007 से 2013 के दौरान मजदूरों की पी एफ की राशि जमा ही नहीं की। वरकरों का फण्ड का 67 करोड़ रुपया फँस गया है। ठेका समाप्त। कोर्ट केस। नई ठेकेदार कम्पनी ने 2014 में ठेका लिया। इधर सितम्बर 2015 में उसका भी ठेका खत्म और अन्य ठेकेदार कम्पनी ने ठेका लिया है। वरकरों के फण्ड के 67 करोड़ रुपये कोर्ट-कचहरी की भूलभुलैया में।

अलस्टोर्म मजदूर : '' प्लॉट160 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में पावर प्रैसों पर आये दिन दुर्घटना होती है, उंगलियाँ कटती हैं, पैर में चोट लगती है। मजदूरों की ई एस आई व पी एफ नहीं है। हाथ कटने पर दो दिन दवा-पट्टी करवा कर नौकरी से निकाल देते हैं। हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते।'' ***कनिका एक्सपोर्ट वरकर:*** '' प्लॉट ए-187 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करते 400 मजदूरों में 50 की ही ई एस आई व पी एफ हैं। न्यूनतम वेतन नहीं देते.....

श्रम विभाग दिल्ली

डी-5 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में निशा फैशन के एक मजदूर ने 22 मई को कम्पनी से 15 दिन की छुट्टी माँगी। प्रोडक्शन इन्चार्ज बोला कि घर जाना है तो इस्तीफा लिख कर जाओ। वरकर ने छुट्टी का आवेदन साहब की टेबल पर रखा और घर चला गया। छुट्टी से लौटने पर कम्पनी ने ड्युटी पर नहीं लिया। वरकर ने श्रम विभाग में शिकायत की।

श्रम निरीक्षक फैक्ट्री आया। कम्पनी से कहा कि ड्युटी पर रख लो तो बोले कि हाँ, रख लेंगे। मई माह की तनखा दी और ओवर टाइम के पैसे टाल दिये। अगले दिन ड्युटी पर गया तो कम्पनी ने ड्युटी पर नहीं रखा।

फिर श्रम विभाग गया। श्रम निरीक्षक, श्रम उपायुक्त, सहायक श्रम आयुक्त यही बोले कि केस करो, डिमाण्ड नोटिस दो। मजदूर ने माँग-पत्र देने से इनकार किया, अदालत में बरसों तारीखें भुगतने से मना किया, शिकायत पर कार्रवाई के लिये कहा। पुष्पा भवन, पुष्प विहार स्थित श्रम विभाग के 15 दिन चक्कर कटवाये। डिमाण्ड नोटिस, कोर्ट-कचहरी की राह मजदूर द्वारा ठुकरा दिये जाने पर अधिकारी बोले कि जहाँ जाना है चले जा, आयेगा हमारे पास ही।

श्रम आयुक्त को यह सब लिख कर दिया। लेबर कमिश्नर ने मामला पुष्पा भवन कार्यालय भेजा। पुष्पा भवन में पूछने पर बोले कुछ नहीं आया है और चक्कर कटवाये। इस पर श्रम आयुक्त कार्यालय गया। वहाँ से डायरी नम्बर दिया। डायरी नम्बर ले कर पुष्पा भवन पुहुँचा तब भी टालमटोल और तुझे कुछ नहीं मिलेगा वाली बातें। कागज नहीं पहुँचे की बात लिख कर दो को कहा तब कुछ नरम पड़ कर इधर-उधर ढूँढने लगे। तीन घण्टे बाद बोले कि कागज पहुँचने वाले दिन ही श्रम निरीक्षक को दे दिये थे।

श्रम निरीक्षक फिर सहायक श्रम आयुक्त के पास ले गया और लेबर कमीश्नर के पत्र का जिक्र किया। कहीं चला जा कहने वाले साहब ने लेबर इन्सपैक्टर से फैक्ट्री जा कर ड्युटी पर रखवाने को कहा। साँय को मैनेजमेन्ट श्रम निरीक्षक से फिर बोली कि हाँ, रख लेंगे और अगले दिन फिर ड्युटी पर नहीं रखा। श्रम निरीक्षक ने फिर वरकर से 15 दिन चक्कर कटवाये।

मजदूर ने लेबर कमिश्नर को फिर लिख कर दिया। श्रम आयुक्त से कागज फिर पुष्पा भवन पहुँचे। श्रम निरीक्षक अपनी कार में बैठा कर वरकर को ओखला औद्योगिक क्षेत्र ले गया। साहब फैक्ट्री में चला गया और उनके ड्राइवर ने इधर-उधर घुमाने के बाद फैक्ट्री के पास उतार दिया। इन्तजार कर रहे मजदूर के पास दस मिनट बाद फोन आया कि तूने मेरे ड्राइवर से कहा कि वसूली करता हूँ, जा तेरा कुछ नहीं करूँगा।

मजदूर ने फिर लिख कर श्रम आयुक्त को दिया। लेबर कमिश्नर ने फिर पुष्पा भवन भेजा। श्रम निरीक्षक ठण्डा पड़ गया। बोला कि तुम ने तो फोन भी नहीं किया। वरकर बोला कि बीस बार फोन किया पर उठाया ही नहीं। लेबर इन्सपैक्टर मजदूर को ले कर फैक्ट्री गया और अपने सामने साँय चार बजे ड्युटी पर रखवाया। तीन-चार घण्टे काम करते हो गये तब तुझे नहीं रखेंगे कह कर कम्पनी ने फैक्ट्री से निकाल दिया।

अगले दिन श्रम निरीक्षक मजदूर को ले कर सहायक श्रम आयुक्त के पास ले गया। साहब बोले, ''निकाल दिया तो मैं क्या करूँ। लिख कर दे। मैं रखवा दूँगा। कम्पनी फिर निकाल देगी। फिर लिख कर देना, फिर रखवा दूँगा, फिर निकाल देंगे। यह तो ऐसे ही चलेगा।''

मजदूर ने यह बातें 30 नवम्बर को लिख कर लेबर कमिश्नर और श्रम मन्त्री, दिल्ली सरकार को दी हैं।

पाँच महीने की यह कहानी है।

ओखला फेज-1 में डी-5 स्थित निशा फैशन/थीम एक्सपोर्ट फैक्ट्री में कार्यरत 1000 मजदूरों में 10 सैम्पलिंग टेलरों को ही दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। यहाँ हैल्परों की तनखा 7500-8000 और प्रोडक्शन टेलरों की 9500 रुपये है। एक हजार में 250 की ही ई एस आई व पी एफ हैं। महीने में 120 घण्टे के करीब ओवर टाइम जिसका भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, 18-20 तारीख को। मजदूर यह बातें श्रम विभाग में कहता तो वो कहते कि तू इस सब को छोड़ और अपनी बात कर।

सुरक्षाकर्मी

केन्द्र सरकार के चार प्रधान कार्यालय फरीदाबाद में एन एच 4 में स्थित हैं। इन कार्यालयों में सफाई कर्मचारी और गार्ड सरकार ने ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। सफाई कर्मचारियों और गार्डों को हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। गार्डों को साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई त्यौहारी छुट्टी नहीं। इन सफाई कर्मचारियों और गार्डों में किसी की भी ई एस आई नहीं है, पी एफ नहीं है। इधर सफाई कर्मियों और गार्डों ने केन्द्र सरकार के फरीदाबाद में एक कार्यालय हैड को लिख कर सरकार के कानून लागू करने का आग्रह किया है।

सेन्टिल सेक्युरिटी कम्पनी के 32 गार्ड ओरियन्ट इलेक्ट्रिक फैक्ट्री (प्लॉट 11 सैक्टर-6, फरीदाबाद) में ड्युटी करते हैं। प्रतिदिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और महीने के 30-31 दिन ड्युटी। ओरियन्ट इलेक्ट्रिक में ठेकेदारों के जरिये उत्पादन कार्य में रखे 1000 मजदूर ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से लेने लगे। लेकिन गार्डों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से ही देते थे। इधर पाँच महीने से यह 32 गार्ड भी ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से लेने लगे हैं।

प्रो-इन्टरएक्टिव सर्विसेज (मुख्यालय मालवीय नगर, दिल्ली) के गार्ड ओरियन्ट क्राफ्ट कम्पनी की फैक्ट्रियों पर ड्युटी करते हैं। प्लॉट 15 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित ओरियन्ट क्राफ्ट फैक्ट्री में कम्पनी के अपने 15 गार्ड हैं और 40 गार्ड प्रो-इन्टरएक्टिव सर्विसेज के हैं। ओरियन्ट क्राफ्ट अपने गार्डों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 9500 से 17,000 रुपये देती है ई एस आई व पी एफ राशि काट कर। प्रो-इन्टरएक्टिव गार्ड को 12 घण्टे रोज पर 30-31 दिन के 8026 रुपये, ई एस आई व पी एफ काट कर।

ग्लोब सेक्युरिटी सर्विस कम्पनी गुड़गाँव में रोज 12 घण्टे और महीने में 30-31 दिन ड्युटी पर गार्ड को 9000 और गनमैन को 12,200 रुपये देती है, ई एस आई व पी एफ की राशि काट कर।

हरियाणा इन्डस्ट्रियल सेक्युरिटी सर्विस के जो गार्ड फरीदाबाद शिवालिक प्रिन्ट्स फैक्ट्रियों में ड्युटी करते हैं उन्हें अर्ध-कुशल अ वाला न्यूनतम वेतन, 5943 रुपये देते थे। शिफ्ट 12-12 घण्टे की और महीने के 30-31 दिन ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। इधर नवम्बर से गार्ड को अर्ध-कुशल अ वाला न्यूनतम वेतन, 7980 रुपये देंगे पर महीने के 26 दिन की बजाय 30-31 दिन पर देने की फिराक में लगते हैं।

हरियाणा सरकार द्वारा 1 नवम्बर 2015 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 7600 रुपये मासिक

अर्ध-कुशल ब 8379 रुपये मासिक

कुशल ब 9238 रुपये मासिक

उच्च कुशल श्रमिक 9700 रुपये मासिक

कुछ इमेल पते और फोन नम्बर

मुख्य मन्त्री, हरियाणा 0172–2749393, 2749409
< cm@hry.nic.in>

श्रम मन्त्री, हरियाणा 0172–2740212
< labourm-hry@nic.in>

श्रम सचिव, हरियाणा 0172–2713832
< fcle@hry.nic.in>

श्रम आयुक्त, हरियाणा 0172–2701373
< labour@hry.nic.in>

मुख्य मन्त्री, दिल्ली 011–23392020, 23392030
< cmdelhi@nic.in>

पहली नौकरी

एम.एस सी. करने के बाद खाली बैठे दस महीने होने को हो गये तब जान-पहचान के जरिये एक बड़ी फैक्ट्री में लगा। पहली बात : फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी। दूर है और फैक्ट्री आने-जाने में साइकिल से सवा घण्टा लग जाता है।

पहलेपहल दिन की ड्युटी रही और लगा कि फैक्ट्री में किसी वरकर के पास टाइम नहीं है। हर विभाग में सुपरवाइजर और इन्चार्ज चिल्लाते दिखते और कहते कि अपनी सोच बदलो। मैंने साथी मजदूरों से पूछा कि सोच में क्या बदलने को कह रहा है साहब। उन्होंने बताया कि प्रोडक्शन बढाने की बात कर रहा है, हरामी है, पागल है, इसकी सुना मत करो। आराम से काम किया कर। मैंने सोचा कि क्या बदलूँ 12 घण्टे की ड्युटी में। मन तो करता है कि चिल्लाने वालों को मारूँ। एक दोस्त कह रहा था कि उनकी फैक्ट्री में नाइट में कई बार इतना ऊब जाते हैं स्टूल इधर-उधर फेंकने लगते हैं, खूब उधम करते हैं, सुपरवाइजर से हाथापाई की नौबत आ जाती है। कैजुअल वरकर किसी से नहीं डरते। दो दिन में ही मेरी कई डिपार्टों के लोगों से बातचीत होने लगी।

मैंने पहली बार कुछ महिलाओं को लाइन पर 12 घण्टे खड़े-खड़े काम करते देखा। काफी महिलायें 12 घण्टे बैठे-बैठे लाइनों पर काम करती देखी। पुरुष मजदूरों के महिला मजदूरों से बात करने पर मैनेजमेन्ट ने रोक लगा रखी है।

सब इसी इन्तजार में रहते हैं कि कब 12 घण्टे पूरे हों। सुबह 9 से काम शुरू होने के बाद मैं रात के 9 बजने का बेसब्री से इन्तजार करता। बहुत ज्यादा होते हैं 12 घण्टे। और कुछ वरकरों को जबरन 24 घण्टे भी रोक लेते हैं।

चार दिन बाद रात की 12 घण्टे की ड्युटी शुरू हुई। मन नहीं था फिर भी गया। काम करते-करते नींद आ रही थी। रात दो बजे लन्च के समय सब वरकर आधा घण्टा कैन्टीन में सो गये। गार्ड उठाते हैं। एक बन्दा तो शौचालय में जा कर डेढ घण्टे सो गया। दिन के तो 12 घण्टे फिर भी कट जाते हैं, रात वाले 12 घण्टे तो पूरे होते ही नहीं दिखते। प्रोडक्शन पूरा करने के चक्कर में सुबह पाँच बजे से हर डिपार्ट में बहुत-ही तेजी से काम करते हैं। मेरे नजदीक वाले मोल्डिंग डिपार्ट में सुबह आग लगी और दो मजदूर जल गये – एक अस्पताल में सात दिन से भर्ती है।

दूसरी शिफ्ट वाले पहुँच जाते हैं तब कार्यरत लोगों की छुट्टी करते हैं। रात की शिफ्ट वालों को 9 की बजाय छूटने में 9½ तो बज ही जाते हैं। घर पहुँचते 10½, नहाने-खाने में 11½ हो जाते हैं। एक दिन तो खाना खाते-खाते सो गया। नाइट ड्युटी में नींद पूरी होती ही नहीं। रात ड्युटी में कई लोग तो नींद में सोते-सोते काम करते हैं और बोलने पर चौंक जाते हैं।

शुक्रवार को रात की ड्युटी कर मैं शनिवार सुबह फैक्ट्री से निकला। मेरे आगे साइकिल पर फैक्ट्री का एक और वरकर था। सड़क पार करते समय अचानक उसे एक ट्रैक्टर ने टक्कर मारी। बुरी तरह घायल हो गया। ऑटो में रख कर कुछ दूर गये थे जब फैक्ट्री की एम्बुलैन्स पहुँची। अस्पताल में होश नहीं आया, दो दिन बाद मृत्यु हो गई।

लाइब्रेरी–जेनेसिस और साई–हब

कुछ मित्रों द्वारा मिल कर बनाई लाइब्रेरी-जेनेसिस और साई-हब इन्टरनेट पर दो साइट हैं जो ज्ञान-विज्ञान वाली सामग्री मुफ्त में पी डी एफ फाइल में उपलब्ध करवाती हैं। एक बड़ी धन्धेबाज प्रकाशक कम्पनी, एल्सेवियर ने अमरीका में न्यायालय में उन पर कॉपीराइट उल्लंघन का केस दायर कर करोड़ों रुपये हर्जाने की माँग की है ताकि लाइब्रेरी-जेनेसिस तथा साई-हब बन्द हो जायें और मुफ्त-फ्री-निःशुल्क की विश्व-व्यापी बयार-बयारा-बयारी को डरा कर रोका जा सके। निःशुल्क को, फ्री को बाँधने-बींधने के इस नये प्रयास के विरोध में 30 नवम्बर 2015 से एक चिट्ठी इन्टरनेट पर घूम रही है। इस पत्र को हिन्दी में पढ सकते हैं, सुन भी सकते हैं इन्टरनेट पर < http://custodians.online/hindi.html >

लेख, कविता, कहानी, उपन्यास, पाठ्यपुस्तक, गीत, संगीत, चित्र, चलचित्र की प्रतिलिपि, हबहू प्रतिरूप, पुनः उत्पादन की लागत आज बहुत-ही कम हो गई है। बात एक प्रति या सौ-दो सौ कॉपियों की नहीं है। बात एक स्थान, एक छोटे-मोटे दायरे की नहीं है। आज लाखों-करोड़ों प्रतियाँ संसार में किसी भी स्थान पर, कभी भी, क्षणों में, शून्य के निकट आती लागत में उपलब्ध हैं। किसी भी स्थान से दुनिया-भर में कहीं भी अत्यन्त कम लागत पर इन्हें सैकेण्डों में बहुत आसानी से पहुँचा सकते हैं।

भौतिक उत्पादन में, अनाज-कपड़ा-मकान-जूते के उत्पादन-पुनः उत्पादन में भी आज लागत बहुत कम हो गई है, तेजी से और कम हो रही है। फैक्ट्री में मजदूर अपनी लागत-अपनी दिहाड़ी चार-पाँच मिनट के कार्य में निकाल देते हैं।

ऐसे में खरीद-बिक्री, लाभ-हानि, रुपये-पैसे, मण्डी-मुद्रा दुखदायी मजाक बन गये हैं। भारत सरकार 15 रुपये किलो में अनाज खरीद कर अस्सी करोड़ लोगों को एक-दो रुपये किलो में बेचने के लिये सेना-पुलिस-प्रशासन पर लाखों करोड़ रुपये खर्च करती है।

लाइब्रेरी-जेनेसिस और साई-हब पर मुकदमे फूहड़ प्रहसन हैं क्योंकि लाखों-करोड़ों लोग हर रोज एक-दूसरे को इन्टरनेट पर मुफ्त में सामग्री उपलब्ध करवाते हैं। और, इस सन्दर्भ में घूम रही चिट्ठी इन्टरनेट पर निःशुल्क आदान-प्रदान को और प्रेरित कर रही है। भौतिक वस्तुओं का फ्री में आदान-प्रदान भी दुनिया में बढ रहा है, और तेजी से बढने की परिस्थितियाँ हैं।

डर रेत की दीवार है। लालच रेत की दीवार है। हम सात अरब लोग आज एकमेव और एकमय के, unique and together के दौर में हैं।

निमंत्रण

दिसम्बर में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014
E-mail < majdoorsamachartalmel@gmail.com >
E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

★ *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*

★ *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।*

★ *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं।* ***चर्चाओं के लिए समय निकालें।***

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।